ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 192-194
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

# बौद्धकाल में उच्चशिक्षा का स्वरूप

डॉ0 अजय कुमार यादव

एम0 एस–सी0, एम0 एड0–एसो. प्रोफेसर – शिक्षण – प्रशिक्षण, बी.एड. विभाग, चौधरी चरण सिंह पी. जी. कालेज, हेवंरा– इटावा (उ.प्र.), भारत

Received- 05 .03. 2022, Revised- 10 .03.2022, Accepted - 12.03.2022 E-mail: drajay2860@gmail.com

***सारांशः –*** *लगभग ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी में वैदिक कालीन शिक्षा के ह्रासोन्मुखी हो जाने के कारण आमजन की परिवर्तित आकांक्षाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति नही हो पा रही थी। ऐसे ही संक्रमण काल में महात्मा गौतम बुद्ध का जन्म हुआ। उन्होंने शिक्षाकों प्रासंगिक और आमजन की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने के उद्देश्य से उसके स्वरुप को परिवर्तित करके बौद्ध शिक्षा को जन्म दिया। बौद्ध शिक्षा ऐसी शिक्षा पद्धति थी, जो ब्राम्हणीय शिक्षा पद्धति की प्रतिद्वन्दी थी, लेकिन अनेक बातों में उसके सदृश थी ।*[1]

***कुंजीभूत शब्द– ह्रासोन्मुखी, संक्रमण काल, प्रासंगिक और आमजन, ब्राम्हणीय शिक्षा, सामुद्रिक विद्या, परा विद्या।***

बौद्ध धर्म का विकास मठों में हुआ था। स्वाभाविक थाकी शिक्षा का केन्द्र भी में मठ ही थे और शिक्षा देने का कार्य भिक्षुओं के हाथ में थी। इन मठों या संघों के अतिरिक्त और कही शिक्षा नहीं प्रदान की जाती थी। प्राचीन काल के समान ही बौद्ध काल में शिक्षा द्विस्तरीय थी–

**1. प्राथमिक शिक्षा, 2. उच्चशिक्षा**

बौद्ध शिक्षा निवृति प्रधान थी, इसका उद्देश्य जीवन में निर्वाण प्राप्त करना होता था। अतः शिक्षा भी धर्म प्रधान थी। विद्यारम्भ करने के लिए छोटी अवस्था में ही बालक का प्रव्रज्या (पब्बज्जा) संस्कार करना होता था। इसके उपरांत ही बालक 'श्रमण' बन कर मठ में उपस्थित होता था। बालक के शिक्षा प्रारम्भ करने की उम्र 6 वर्ष हुआ करती थी। प्राथमिक शिक्षा समाप्त करने के बाद छात्र उच्च शिक्षा के लिए बौद्ध मठों में प्रवेश लेता था।[2] सारांशतः यह कह सकते हैं कि बारह वर्ष से पन्द्रह वर्ष की आयु के पश्चात् बालक उच्च शिक्षा ग्रहण करने की अर्हता प्राप्त कर लेता था। अल्तेकर के अनुसार, 15 या 16 वर्ष के उम्रमें उच्च शिक्षा का प्रारम्भ होता था।[3]

बौद्ध काल में बौद्ध मठों में ही उच्च शिक्षा की व्यवस्था सुचारू रूप से चलती थी। आज के परिप्रेक्ष्य में यह कहा जा सकता है कि आधुनिक विश्वविद्यालयी शिक्षा की जड़े बौद्ध काल तक जाती हैं। तक्षशिला, विक्रमशिला, नालंदा आदि बौद्ध कालीन शिक्षा के केंद्र आज भी विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उच्च शिक्षा केवल बौद्ध भिक्षु को ही प्रदान की जाती थी। उच्च शिक्षा के केंद्र भी बौद्ध मठ ही थे। उच्च शिक्षा के अंतर्गत विद्यार्थी व्याकरण, धर्म, ज्योतिष औषधि शास्त्र दर्शन आदि में सामान्य ज्ञान प्राप्त करते थे। सामान्य ज्ञान के अतिरिक्त किसी एक विषय में विशेषता की भी व्यवस्था थी। ह्वेनसांग के अनुसार, उच्च शिक्षा के अंतर्गत शिक्षा के दोनों पहलुओं, सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पर जोर दिया जाता था।

**उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम–** उच्च स्तर पर पहुंचकर विद्यार्थी संस्कृत, साहित्य, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद और राजनीति का विशेष अध्ययन करता था। जो विद्यार्थी दर्शन या न्याय का अध्ययन करना चाहते थे, उन्हें हेतु विद्या, अभिध र्मशास्त्र या न्यायशास्त्र आदि चुनेहुए बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन करना पड़ता था। हीनयान के अनुयायी अन्य बौद्ध धर्म प्राचीन पुस्तकों में विशिष्ट गति प्राप्त करते थे। चूँकि शिक्षा धर्म प्रधान थी, इसलिए अधिकांश बौद्ध भिक्षु
धर्मशास्त्र का ही अवलोकन करते थे। उनका जीवन ही
धर्ममय था। सुत्तन्त, विनय साहित्य तथा धर्म इत्यादि हीं उनके शिक्षा के विषय थे। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि संपूर्ण समाज ही धर्म का अध्ययन करता था और देश में जीवन उपयोगी शिक्षा का अभाव था। वास्तव में ऐसा नहीं था। भारत में मौर्य काल तथा गुप्त काल स्वर्ण युग के नाम से पुकारे जाते हैं, जबकि प्राचीन भारतीय साहित्य, दर्शन, कला, व्यापार, कृषि तथा सैनिक उन्नति की दृष्टि से अपने वैभव की पराकाष्ठा पर थे। आर्थिक दृष्टिकोण से भारत धनधान्य से परिपूर्ण था। ऐसी अवस्था में हम यह नहीं कह सकते हैं कि यहां भौतिक विषयों की शिक्षा का अभाव था।

बौद्ध कालीन लौकिक शिक्षा के प्रमुख विषय, कला– कौशल जैसे– कातना, बुनना, छपाई, दर्जी का कार्य अर्थात सिलाई, लेखन, गणना, चित्रकला, चिकित्सा व आयुर्वेद अर्थात सर्जरी तथा मुद्रा इत्यादि थे।[4]

विज्ञान ललित एवं शिल्प कलाओं के नामों का उल्लेख जातकों में तो नहीं मिलता किंतु 'मिलिंदपन्हो' में 18 सिप्पोंका वर्णन है, जो पाठ्यक्रम में सम्मिलित थे। तक्षशिला के कुछ विद्यालयों में हन्ती– सुत (हाथी– विद्या) तंत्र मृगया, पशुविद्या, धनुर्विद्या, सामुद्रिक विद्या,सर्प विद्या और आयुर्वेद का शिक्षण होता था। इनमें से केवल एक–एक विषय में ही विद्यार्थी विशेष योग्यता प्राप्त कर सकते थे। इन सभी विद्यार्थियों के लिए सैद्धांतिक तथा व्यावसायिक शिक्षा का भी प्रबंध इन विद्यालयों में था। जीवक के उदाहरण से प्रतीत होता है कि उसने शल्य विद्या की व्यावहारिक शिक्षा पायी थी। यही कारण था कि ठीक अपने विद्यार्थी जीवन के पश्चात ही उसने दो सफल ऑपरेशन किए जो अत्यंत कठिन थे। इनके अतिरिक्त प्रकृति निरीक्षण

**अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

कानून और सैनिक प्रशिक्षण भी पाठ्य वस्तु में सम्मिलित थे। तक्षशिला इन विद्याओं का अध्ययन केंद्र था।

मिलिंदपन्हो से प्रतीत होता है कि बौद्ध युग में ब्राह्मणीय शिक्षा का भी प्रचार था। वास्तव में दोनों प्रकार की शिक्षाएं एक दूसरे की पूरक थीं। ब्राह्मणीय शिक्षा में चार वेद, इतिहास, पुराण, काव्य, शब्द– विद्या, व्याकरण, ज्योतिष, वेदांग, सामुद्रिक विद्या, शकुन विद्या, सांख्य–योग, न्याय–वैशेषिक, संगीत, चिकित्साशास्त्र तथा तंत्र विद्या इत्यादि सभी विषय भिन्न– भिन्न बौद्ध कालीन विश्वविद्यालयों में पढ़ाये जाते थे। पांचवीं शताब्दी में फाह्यन ने भी यह लिखा है कि उस समय ब्राह्मणीय शिक्षा का भी जोर था। विनय ग्रंथ बौद्ध भिक्षुओं के प्रधान अध्ययन ग्रन्थ थे। उच्च शिक्षा के लिए संस्कृत का अध्ययन अनिवार्य था। स्वयं फाह्यन ने तीन वर्ष तक पाटलि पुत्र में रहकर संस्कृत का अध्ययन किया था। इसके अतिरिक्त स्थानीय भाषाओं और पाली का भी प्रचार हो चुका था। यहां तक कि अधिकांश बौद्ध ग्रंथ पाली में थे।

उच्च शिक्षा के विषय में ह्वेनसांग ने नालंदा का वर्णन किया है कि उसमे बौद्ध दर्शन, विनय साहित्य, योग तथा अन्य सभी विद्याएँ पढ़ाई जाती थीं। विक्रमशिला तर्कशास्त्र वन्याय शास्त्र का केन्द्र था। इत्सिंग ने भी इन्ही पाठ्यक्रम और शिक्षा विषयों का वर्णन किया है। उसने यह लिखा है कि भिक्षु लोग वेदों की भाँति 'त्रिपिटक' का अध्ययन करते थे।[5]

**निष्कर्षत–** यह कहा जा सकता है कि बौद्ध कालीन शिक्षा में भिक्षुओं का सर्वांगीण विकास करने के लिए प्रायः सभी विषयों को महत्ता प्रदान की जाती थी, परंतु अध्यात्मिक पक्ष की प्रबलता रही है।[6]

**शिक्षण विधि–** शिक्षा का पाठ्यक्रम कितना भी उच्चकोटिका क्यों ना हो उसका उपयोगी एवं प्रभावपूर्ण होना शिक्षण विधि पर ही निर्भर करता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम का शिक्षण कार्य किस प्रकार किया जाए, किस विधि के द्वारा विद्यार्थी को ज्ञान दिया जाए, जिससे विद्यार्थी को ज्ञानार्जन में किसी प्रकार की दिक्कत न होने पाए, इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर ही शिक्षण विधियों का निर्माण किया जाता है। शिक्षण विधि वह माध्यम है, जिसके द्वारा छात्र पाठ्यक्रम में निर्धारित विषयों के उद्देश्य तक पहुंचने में समर्थ हो पाता है।

बौद्धों ने ब्राह्मणों की वैयक्तिक शिक्षा पद्धति का अनुकरण न करके सामूहिक शिक्षण पद्धति का प्रयोग किया। शिक्षा केंद्रों में विभिन्न भिक्षुओं द्वारा छात्रों को सामूहिक रूप में विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती थी। विभिन्न बौद्ध ग्रंथों में कई प्रकार की शिक्षण विधियों की व्याख्या की गई है। उस समय उचित शिक्षण विधि के माध्यम से बालक की अंतर्निहित शक्तियों को विकसित करने पर बल दिया जाता था। बौद्ध काल में शिक्षण की प्रमुख पद्धति मौखिक पद्धति ही थी, जिसमें प्रवचन, भाषण, श्रवण– मनन, चिंतन,कण्ठ स्थीकरण आदि मानसिक क्रियाओं का प्रवेश किया जाता था।[7] शिक्षण विधि प्रायः मौखिक थी। इसके सामान्य अंग थे– भाषण, प्रवचन और प्रश्नोत्तर।

शिक्षण विधि की एक विशेषता यह थी कि देशाटन, प्रकृति– निरीक्षण और विशेषज्ञों के व्याख्यानों को महत्व दिया जाता था। एक अनोखी विशेषता को गन्नारमिरडललने इन शब्दों में अंकित किया है– ''शास्त्रीय विवादों को प्रोत्साहित किया जाता था। इस प्रकार कीविद्वत सभाएं बौद्ध उच्चशिक्षा की एक अनोखी विशेषता थी।''[8]

बौद्धकाल में उच्च शिक्षा के प्रमुख केंद्रों में नालंदा और विक्रमशिला के विश्व विद्यालय ही प्रमुख थे। इन शिक्षण केंद्रों में ही विद्यार्थियों के लिए निवास, भोजन, वस्त्र, चिकित्साआदि की व्यवस्था रहती थी। विद्यार्थियों का प्रवेश लेते समय योग्यता पर ध्यान दिया जाता थान कि जाति– पाँति, वर्ण, वर्ग आदि पर। इन शिक्षा केंद्रों के प्रधान प्रायः विद्वान भिक्षु हुआ करते थे जिनकी अधीनता में विभिन्न विषयों के महामहोपाध्याय होते थे। यद्यपि इनको राजाओं एवं धनिकों से आर्थिक सहायता प्राप्त होती थी, किंतु ये बाह्य नियंत्रण से पूर्णतया मुक्त थे।[9] संपूर्ण विद्यालय का अध्यक्ष कोई ख्यातिलब्ध भिक्षु होता था। संघ के सदस्य प्रायः उसका चुनाव करते थे। चुनाव में भिक्षु का चरित्र, पांडित्य और वय का ध्यान रखा जाता था।[10]

बौद्ध धर्म परंपरागत हिंदू धर्म के विरुद्ध एक विद्रोह था, लेकिन दोनों में मतभेद होते हुए भी दोनों की मूल प्रवृत्तियाँएक थी। ये कहा जा सकता है कि बौद्ध कालीन शिक्षा ब्राह्मणीय शिक्षा का एक अधिक सुव्यवस्थित, व्यापक, वैज्ञानिक और परिवर्धित रूप था।[11] बौद्ध कालीन उच्च शिक्षा में व्यक्तियों परबलन देकर व्यक्ति समूह पर दिया जाता था। उच्च शिक्षा के लिए विद्यार्थी को गृहत्याग कर शिक्षा केंद्रों पर जाना ही पड़ता था, लेकिन कठोर जीवन को अधिक श्लाघ्य नहीं समझा जाता था। बौद्ध कालीन उच्चशिक्षा के बारे में यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि उस समय शिक्षा का जन तंत्रीकरण हो चुका था। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि बौद्ध कालीन उच्च शिक्षा ने भारत में एक उच्च संस्कृति का शिलारोपण किया तथा आम जीवन में एकनूतनता और परिवर्तन का बीजा रोपण किया।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Keay, F-E-& Indian Education in Ancient and Letter Time- Page&85.
2. गुप्ता, रामबाबू, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृष्ठ– 44.
3. अल्तेकर, अनंतसदाशिव, प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, पृष्ठ सं. – 112.

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

4. रावत, प्यारेलाल, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृष्ठ सं. 581.
5. रावत, प्यारेलाल, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृष्ठ सं. 58.
6. अल्तेकर, अनंत सदा शिव, प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति।
7. गुप्ता, रामबाबू, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृष्ठ–49.
8. Myrdal; Gunnar, Ancient Drama, Volume& 3rd, p-1629.
9. गुप्ता, रामबाबू, प्राचीन भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृष्ठ–49.
10. अल्तेकर, डा. ए. एस., प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, पृष्ठ सं. 58.
11. रावत, प्यारेलाल, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृष्ठ सं. 65.

*****